Artistic Narration, Vol. VIII, 2017, No. 2: ISSN (P) : 0976-7444 (e) : 2395-7247Impact Factor 3.9651 (ICRJIFR)
UGC Approved Journal No. 43285

गाँधी दर्शन से प्रभावित कला

डॉ0 नीलिमा गुप्ता
विभागाध्यक्षा एवं एसो0 प्रोफे0, चित्रकला विभाग, आई०एन०पी०जी० कॉलिज, मेरठ

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 नीलिमा गुप्ता,
गाँधी दर्शन से प्रभावित कला,
Artistic Narration 2017,
Vol. VIII, No.2, pp.57- 68
http://anubooks.com/?page_id=485

सारांश

मानव जाति के इस लम्बे इतिहास में कई ऐसे महान व्यक्ति जन्म लेते हैं जिनके व्यक्तित्व का प्रभाव अपने देश और काल की सीमाओं को पार करके दूर–दूर तक पहुँचता है गाँधी की गिनती भी ऐसे ही महापुरूषों में की जा सकती है। गाँधी का उद्देश्य मानव समाज के ढाँचे को बदलने का उतना नहीं है, जितना मानव को स्वयं बदलने का है। महात्मा गाँधी केवल संत ही नहीं, वरन् एक महान क्रान्तिकारी भी थे। यदि उन्हें उग्र क्रान्तिकारी भी कहा जाये तो अत्युक्ति नहीं।

गांधी के सत्य, अहिंसा, सादगी और सरलता ने देश ही नहीं संपूर्ण संसार को नवीन दृष्टिकोण दिया। जो कला जगत को भी अपने में रंग गया और कला जगत में कलाकारों द्वारा गाँधीवादी विचारधारा का चित्रण हुआ। हरिजन कलाकार स्वामी कुमारिल ने प्रारम्भ से ही हरिजन उत्थान जैसे सामाजिक कार्यों को अपनाया। शान्ति निकेतन में गाँधी जी के सम्पर्क में आने के पश्चात उनसे प्रभावित हो उनकी कला में नवीन मोड़ आया जिनमें गाँधी की सादगी दर्शनीय है। मूर्तिकार सुतार मानते हैं कि गाँधी का जीवन स्वयं एक संदेश है। जिसे प्रसारित करने के लिये उन्होंने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गाँधी की मूर्तियों का निर्माण किया। गाँधी के भारतीय चिंतन के अनुसार अनेक कलाकारों ने अपनी कला में अहिंसा और भेदभाव को मिटाकर एक स्वच्छ समाज की छवि प्रस्तुत की।

डॉ0 नीलिमा गुप्ता

मानव जाति के इस लम्बे इतिहास में कई ऐसे महान व्यक्ति जन्म लेते हैं जिनके व्यक्तित्व का प्रभाव अपने देश और काल की सीमाओं को पार करके दूर–दूर तक पहुँचता है। गाँधी की गिनती भी ऐसे ही महापुरूषों में की जा सकती है।[1] वास्तव में देखा जाये तो गाँधी एक दिशा सूचक हैं, मानव विकास और मानव प्रगति की उस दिशा की ओर संकेत करने वाले जो मनुश्य को अपूर्णता से पूर्णता की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर और अज्ञान से ज्ञान की ओर जाने का मार्ग दिखाती है। गाँधी का उद्देश्य मानव समाज के ढाँचे को बदलने का उतना नहीं है, जितना मानव को स्वयं बदलने का है। अतः मूलतः गाँधी एक मौलिक क्रान्तिकारी हैं जो मनुष्य समाज ही को नहीं स्वयं मनुष्य में ही क्रान्ति करना चाहते हैं। महात्मा गाँधी केवल संत ही नहीं, वरन् एक महान क्रान्तिकारी भी थे। यदि उन्हें उग्र क्रान्तिकारी भी कहा जाये तो अत्युक्ति नहीं होगी।

गाँधी ने प्राचीन भारतीय दर्शन को अपने अनुभव व चिन्तन के द्वारा व्यापक और पूर्ण करने का प्रयत्न किया है। वे कहते हैं कि ''मैं यद्यपि राजनीतिज्ञ का चोला पहने हूँ, वास्तव में एक धार्मिक व्यक्ति हूँ।'' गाँधी की आजीवन यही मान्यता रही कि अपनी तपस्या के बल से ही दूसरों का हृदय परिवर्तन किया जा सकता है। राजनैतिक दृष्टि से देखें तो गाँधी सबसे बड़े राजनेता रहे हैं। सामाजिक दृष्टि से हरिजन सुधार, शराब–बन्दी, स्त्रियों का उत्थान आदि विभिन्न आन्दोलन गाँधी जी की प्रेरणा से ही पूर्ण हुये। धार्मिक दृष्टि से उन्होंने सभी धर्मों को आदरणीय मान उनके आदर्शों को नयी स्फूर्ति प्रदान की। संसार की विचारधाराओं के विपरीत खादी ग्रामोद्योग को अर्थनीति की दृष्टि से नये साँचे में ढाला।

भारतीय कला सामाजिक, नैतिक, कलात्मक आदि जीवन के पक्षों में आध्यात्मिक सत्य और मूल्य का ही अर्थसूचन करती है।[2] साथ ही सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक दृष्टि से होने वाले परिवर्तनों से प्रभावित हो कर कला के अन्तर्निहित मूल्यों में भी बदलाव आता रहा है। कविता के शब्दों की शक्ति के प्रभाव से भी अधिक कला के रंग, आकार और उनके सम्पूंजन उच्च विद्युत–चुम्बकीय शक्ति के समान हमारी इन्द्रियों को प्रभावित करते हैं। इससे हमारी वैचारिक क्रिया का एक उत्तेजक सिलसिला बनता है। कला की वृहत् सीमा को इंगित करते हुये पिकासो का मानना है कि '''पेन्टिग' आपका घर सजाने के लिये ही नहीं बनायी जाती है। वह युद्ध के हमले और दुश्मन से बचाव के लिये एक हथियार है।'' ''जन आवेग (सामाजिक प्रतिबद्धता) व व्यक्तिगत जरूरतें हमारी कला में एक साथ अभिव्यक्ति पा सकती हैं।''[3] महत्वपूर्ण बात यह है कि अगर आप कलाकार के रूप में जीवित हैं तो ऐतिहासिक क्षणों में आप सक्रिय हिस्सा लेंगे ही। इतिहास से जुड़े विभिन्न अध्यायों ने बार–बार कला की धारा को मोड़ा है और एक विशिष्ट कला से समाज का परिचय कराया है। जो एक ओर वर्तमान को प्रभावित करने की ताकत रखता है, साथ ही भविष्य के लिये अपनी ऐतिहासिकता को सुनिश्चित भी करता है।

गाँधी कलाकार न होने के बाद भी राष्ट्रीय कला की प्रेरणा का मध्य–बिन्दु रहे। गाँधी की स्वदेशी भावना को पुर्नजागरण कला आन्दोलनों में स्वदेशीकरण, शुद्धिकरण के रूप में पूर्ण प्रतिस्थापित किया गया। यद्यपि आरम्भ में गाँधी जी की रूचि चित्रकला के प्रति नकारात्मक ही थी। किन्तु बाद में गाँधी जी ने अपनी भूल मान कर उसे सुधारने के लिये नन्दलाल बसु से अनेक चित्र बनाने का आग्रह किया। नन्दलाल की दृष्टि में ''महात्मा जी न केवल एक महान नेता थे, बल्कि एक महान आत्मा थे। जिनकी आध्यात्मिक अवधारणायें एवं आदर्श बहुत ऊँचे थे।'' बसु को ''कला के अतिरिक्त यदि कुछ अच्छा लगता

था, तो वह था स्वाधीनता आन्दोलन, जिसकी प्रेरणा से उन्होंने डांडी कूंच के चित्र बनाये और गाँधीवादी विचारधारा में कांग्रेस अधिवेशन में पण्डालों का अलंकरण किया।''[4] बसु ने हरिपुर पट्ट–चित्रों की प्रखर कला–ज्यामिति का शक्ति–केन्द्र महात्मा गाँधी के विचारों की विनम्र अभिव्यक्ति ही है। ये रंगीन चित्र–पट्ट अपनी शैली एवं कला–विन्यास की दृष्टि से बाँस एवं सरकण्डों में निर्मित गाँधी–दर्शन के सजावटी प्रतीक थे। इस कार्य में उनके मुख्य सहयोगी विनोद बिहारी मुखर्जी, पेरूमल तथा उनके पुत्र विश्वास बोस थे। बसु के 'डांडी यात्रा' चित्र के संदर्भ में ई० कुमारिल स्वामी का विचार है कि ''वास्तव में यह चित्र गाँधी की संपूर्ण आत्मशक्ति का प्रतीक है। गाँधी जी के सुझाव द्वारा ही बसु ने स्वदेशी भावना को बल प्रदान करने हेतु विभिन्न मिट्टी के रंगों को अपने चित्रों में प्रयुक्त किया।

गाँधी जी ने हमारी घृणा को प्रेम में, विफल कसमसाहट को सत्याग्रह में और विरोध की भावना को असहयोग आन्दोलनों में परिणित किया। उनका विचार था कि ''मैं प्रवृत्ति से सहयोग देने वाला हूँ, मेरे असहयोग का उद्देश्य भी सहयोग को तमाम छोटेपन या क्षूद्रता और असत्य से मुक्त करने का ही रहता है।'' 1920–21 के आन्दोलनों ने हमारी हृदयगत छिपी हुयी भावनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान की। गाँधीवादी विचारधारा और आदर्शों का अंकन चित्रकला, मूर्तिकला एवं विभिन्न शिल्पों में किया गया। गाँधी जी का कला संबंधी दर्ष्टिकोण रामचन्द्रन से कहे गये वाक्य से एकदम स्पष्ट हो जाता है ''मैं दावो के साथ कह सकता हूँ कि मेरे जीवन में सचमुच कला का अचेष्ट समावेश है.... मैं कला के बाहरी लकदक रूप का नहीं, आन्तरिक सौन्दर्य का पुजारी हूँ।'' भारतीय लोक कला के पुनरूत्थान एवं जनसामान्य की कला को सदैव प्रोत्साहन देने वाले गाँधी जी के आश्रम की झोपड़ियाँ तथा कच्चे घरौंदे गोबर मिट्टी से लिये एवं कलात्मक चित्रों से सुसज्जित थे।

भारतीय जनजागरण एवं गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित अवनीन्द्रनाथ तथा उनकी शिष्य परम्परा के साथ–साथ सारे देश के कलाकारों में नई चेतना का उन्मेश भरा। गाँधी जी द्वारा प्रदीप्त जनजागरण के इतिहास का प्रभाव उस समय की कला शैलियों में स्पष्ट दिखायी देता है। गाँधी दर्शन से प्रभावित होकर विष्णु चिंचालकर ने अपने सृजन में कृत्रिम साधनों का त्याग कर व्यर्थ वस्तुओं को बिम्बात्मक विस्तार प्रदान कर कलात्मक रूप दिये।

भारतीय आधुनिक चित्रकला में 20वीं शती के प्रारम्भ से ही कलाकार गाँधी जी की विचारधारा से प्रभावित होने लगे। लघु उद्योग, चर्खा, खादी, हस्तकला, ग्रामीण जीवन की सादगी तथा सत्य, अहिंसा के पोषक गाँधी जी ने सदैव सादा एवं सच्चे जीवन का पाठ पढ़ाया। यामिनी राय ऐसे ही कलाकार हैं जिन्होंने गाँधी जी के आदर्शों को अपनाते हुये देश की वास्तविक लोक कलात्मक संस्कृति को कलात्मकता से अपनाया। गाँधी जी यामिनी राय की सरलता से अत्यधिक प्रभावित थे। गाँधी जी दृष्टि में महत्वपूर्ण खादी पर किये जाने वाले छापे लोक कलात्मक रंगों एवं चित्रों से ही सुसज्जित होते हैं, जो विशेष रूप से यामिनी राय की शैली से प्रभावित हैं। यामिनी राय की कला स्वतन्त्रता से लगभग चालीस वर्ष पूर्व से तथा स्वतन्त्रता के पच्चीस वर्ष बाद तक सामाजिक चेतना को उजागर करती रही। वे सामुदायिक कला के सर्जक थे। गाँधीवादी विचारधारा वाले कालिन्दी वेदन जेना के सृजन कर्म का कैनवास व्यापक है। सादगी उनके व्यक्तित्व का आकर्षण था। उन्होंने गाँधी द्वारा स्थापित संस्थान में न सिर्फ शिक्षा ग्रहण की वरन् गाँधी के विचारों को आत्मसात् करते हुये गाँधी के 'ग्राम स्वराज' नारे को

अपना जीवन लक्ष्य बनाया।

गाँधी स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग द्वारा लोक कलाओं एवं लोक जीवन को बढ़ावा देना चाहते थे। यही कारण है कि गाँधी गाँव के गरीबों तक कला एवं संस्कृति का प्रसार करना चाहते थे। इसीलिये उन्हें विशेष रूप से आदिवासी उपकरणों से लगाव था। उनका कथन था कि ''मेरी कल्पना में आदर्श गाँव में कवि, दस्तकार, वास्तुशिल्पी, भाषाविद्, शोधकर्ता आदि सभी होंगे।''

एम0एफ0 हुसैन ने भारतीय जमीन को कभी नहीं त्यागा। लोककला, भारतीय ग्रामीण परिवेश की झलक उनके चित्रों में सदैव उभर कर आयी है। धर्म से मुसलमान होते हुये भी रामायण जैसे धार्मिक विषयों को उन्होंने चित्रित किया जो स्पष्ट करता है कि उनका व्यक्तित्व गाँधी जी की धर्म निरपेक्षता से प्रभावित था। लोक कलाओं से ही प्रभावित जार्ज कीट ने भारतीय संस्कृति के प्रति लगाव के फलस्वरूप पौराणिक पात्रों के कथानकों का सहज अंकन किया।

जीवन में रची–बसी भारतीयता की आत्मा वाले कलाकार बेन्द्रे की रूचि न सिर्फ संघर्षरत भारतीय जीवन के अंकन की थी वरन् उन्होंने छात्रों एवं नयी पीढ़ी के कलाकारों को बराबर यह शिक्षा दी कि हमें अपने देश की संस्कृति एवं अस्मिता का मान रखते हुये सृजन करना है। एक साक्षात्कार में बेन्द्रे ने कहा कि ''मेरी मान्यता है कि मैं ऐसा सृजन करूं जिसमें से भारतीयता की गन्ध आती हो।''[5]

अमृता शेरगिर के चित्रों में भारतीय जन–जीवन की गरीबी, असहायता, भोलापन, दलित वर्ग की भूख, प्यास और पीड़ा बोलती है। उनके चित्र भारतीयता की आत्मा में रचे–बसे थे। गाँधी का भारती उनकी रंग और रेखाओं में साकार हो उठा। परोक्ष रूप से भी अनेक कलाकारों ने गाँधी जी के जीवन दर्षन से प्रभावित हो आदिवासी कला की सहजता और मौलिकता को, उनके जीवन में प्रचलित प्रतीकों और कार्य–कलापों को उभारा।

भारतीय ग्रामीण जन–जीवन से जुड़े सरल जीवन एवं यथार्थ जीवन के पक्षधर शैलोज मुखर्जी, नीरोद मजूमदार, बेन्द्रे, स्याबक्स चावड़ा, रामकिंकर, शान्ति दवे शील आर्डन, रसिक रावल, आत्मेलकर आदि चित्रकार विशेष उल्लेखनीय हैं।

अफ्रीका से लेकर भारत तक पुर्नजागरण का कार्य कर गाँधी जी ने वैचारिक पुल बनाकर देश को स्वतन्त्र कराने में सहयोग दिया। ''आधुनिक भारतीय चित्रकला के कुछ हस्ताक्षर तो ऐसे हैं जिनका राष्ट्रीय आन्दोलन से सीधा संबंध रहा। उन्होंने गाँधी जी के कदम से कदम मिलाकर समय–समय पर आन्दोलन किये हैं और जेल की यातना भोगी है। कनु देसाई ऐसे ही चित्रकारों में से हैं।'' स्वतन्त्रता से पूर्व निर्मित उनकी अधिकांष कृतियाँ समाज में राष्ट्रीयता को बल प्रदान करने वाली थीं। उनके भारत माता एवं बापू जैसे राष्ट्रीय चित्रों को अत्यधिक सराहना मिली।

कांग्रेस से सीधा सम्पर्क रखने वाले कलाकार के0एस0 कुलकर्णी के चित्रों में यथास्थान राष्ट्रीय भावना को स्थान प्राप्त हुआ। मेरठ (1940) तथा दिल्ली (1951) के कांग्रेस अधिवेशनों में उन्होंने पण्डालों की सज्जा की। छात्रावस्था से ही गाँधी के विचारों से प्रभावित के0जी0 सुब्रमण्यन राजनीति तथा भारत छोड़ों आन्दोलन में भी सक्रिय रहे। उनके व्यक्तित्व में गाँधीवादी रूझान अच्छे अर्थों में मौजूद था। राजनीतिज्ञों की सोच से निराश होकर उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा समय–समय पर सामाजिक तथा राजनीतिक हिंसा पर जीखा प्रहार किया। 2003 की गुजरात हिंसा पर भी उन्होंने टिप्पणी की। आज

भारतीय समाज में जिस प्रकार साम्प्रदायिक हिंसा एक खेल का रूप ले चुकी है उससे भयाक्रान्त आदमी व साम्प्रदायिक स्थितियों को उन्होंने अत्यधिक संजीदगी से उकेरा। जलते हुये शहर के अंकन के माध्यम से संदेश दिया कि शहर जलने के लिये नहीं है। आज की सामाजिक–राजनीतिक स्थितियों का संकेत कुर्सी के लिये लड़ते महन्त एवं मुल्ला के माध्यम से किया। स्त्री का विविध रूपों में अंकन करने के अतिरिक्त के0जी0 ने उसे संघर्ष करते, दंगों का शिकार होते और अन्त में महिषासुर मर्दनी के रूप में हथियार उठा कर समाज की विसंगतियों से लड़ते हुए भी चित्रित किया। वे महसूस करते हैं कि आधुनिकता की आँधी में सब कुछ बदलने के लिये विवश है ''आज का समय ऐसा है कि यदि आज हमारे बीच गाँधी होते तो वैसा इम्पैक्ट उनका भी नहीं पड़ता।''

गाँधी जी के सम्पर्क में आने वाले अनेकानेक कलाकारों ने उनकी राष्ट्रीय भावना एवं गाँधीवादी विचारधारा का अंकन पूर्ण आस्था के साथ किया। वही गाँधी के 1927 में पाण्डु में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लेने जाने के बाद समूचे असम में राष्ट्रीयता का भाव उमड़ पड़ा। 'शाहबानो' श्रृंखला द्वारा मुक्तनाथ बारदोलाई ने समाज को प्रतिबिम्बित कर आलोचना की है। 'ओपियम ईटर' शोषण से जुड़ी सामाजिक बुराई का चित्रण है। उपेन्द्र महारथी भी देश की स्वतन्त्रता के लिये चलाये जा रहे आन्दोलन की ओर आकृष्ट हुये और उससे जुड़ी गतिविधियों में सक्रिय रहे। उन्होंने स्वतन्त्रता का अलख जगाने का कठिन बीड़ा उठाया। दरभंगा के प्रकाशन संस्थान में चित्रकार के रूप में कार्यरत उनका देश प्रेम संबंधी कार्यों का सिलसिला भी चलता रहा। व्यक्तिगत रूप से महात्मा गाँधी के विचारों से प्रभावित होने के कारण उनके जीवन दर्शन पर अनेक रचनायें बनायीं। आडम्बर तथा दिखावे से दूर वे स्वयं भी सदैव सादगी व सदाचार के प्रतीक रहे। उन्होंने सदैव यह प्रयत्न किया कि अपने समय में होने वाले उतार–चढ़ाव को सही दिशा दे सकें। आनन्द देव भी जीवन भर सादगी तथा लक्ष्य प्राप्ति के सुप्रतीक रहे। उनकी पीढ़ी के युवकों ने स्वतंत्रता का मूल्य चुकाने वाले लोगों को स्वयं अपनी आँखों से देखा था। देश के लिये शहीद होने वाले क्रान्तिकारियों से प्रभावित होकर 1957–58 में क्रान्तिकारी विचारधारा संबंधी चित्रों का निर्माण किया।

गुलाम देश में जन्में सुरेन्द्र पाण्डेय ने स्वतन्त्रता के लिये संघर्षरत् भारत तथा गाँधी के चम्पारण सत्याग्रह से लेकर सन् बयालीस के भारत छोड़ों आन्दोलन तक की पीड़ा और छटपटाहट को महसूस किया। वे गाँधी से एक शिष्य की भांति जुड़े रहे। गाँधी विचारधारा से प्रभावित आनन्द कुमार स्वामी के देशभक्तिपूर्ण कथन को भारतीय कला आन्दोलन के घोषणा पत्र के रूप में स्वीकृति मिली। उसमें कहा गया था कि ''यह हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन की कमजोरी है कि हम भारत से अधिक इग्लैंड के उपनगरों को चाहते हैं। स्वदेशी को एक राजनैतिक अस्त्र से अधिक हमारी कला और धर्म का आदर्श होना चाहिए। भारत में कला विद्यालयों का मुख्य काम यूरोपीय आदर्श और पद्धतियों का प्रचलन करना नहीं वरन् भारतीय परम्परा के बिखरे सूत्रों को संकलन व पुनर्संचालन, भारतीय कला चिंतन को राष्ट्रीय संस्कृति का अंग बनाना और हमारे दस्तकारों को भारतीय जन–जीवन के विचारों और चेतना से जोड़ना है।''[7]

अपने से अलग किसी समाज, प्रेमी, नेता अथवा नायक के साथ तादात्मय महसूस करना प्रत्येक मनुष्य की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता होती है। हम में से बहुत कम व्यक्ति ऐसे हैं जिनके जीवन पर तथा कार्य पर अप्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप से गाँधी जी की विचारधारा का प्रभाव न हो। गाँधी एक सम्पूर्ण

विचारात्मक आन्दोलन थे, सामयिक दर्शन थे, दूरन्देशी युग पुरूष थे और शान्ति के मसीहा थे। जिन्होंने सत्य–अहिंसा के व्यापक महत्व को समझा और अपने में आत्मसात कर क्रियान्वित भी किया। जीवन का समग्र दर्शन गाँधी ने अहिंसा की भित्ति पर प्रतिष्ठित किया है। गाँधी की दृष्टि में ''अहिंसा का अर्थ है कि पृथ्वी भर में किसी भी वस्तु को, वचन और कर्म, किसी भी प्रकार से हानि नहीं पहुँचायी जाये।'' गाँधी के अहिंसक आन्दोलनों का क्षेत्र जीवन के किसी एक क्षेत्र तक सीमित न होकर जीवन के समस्त अंगों में व्याप्त है। गांधी के सत्य, अहिंसा, सादगी और सरलता ने देश ही नहीं संपूर्ण संसार को नवीन दृष्टिकोण दिया। जो कला जगत को भी अपने में रंग गया और कला जगत में कलाकारों द्वारा गाँधीवादी विचारधारा का चित्रण हुआ।

आज के विश्व में भौतिकता से आक्रान्त होकर मनुष्य ने अपनी स्वाभाविक मानवीय विशेषताओं को गवाँ दिया है। धर्म स्वयं हिंसा की शरण में है और आज अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद इसकी गोद में बैठा है। राष्ट्रीयता जैसी अवधारणायें महज दिखावा होकर रह गयी हैं। समाज में बढ़ती जा रही इस हिंसा का कारगर प्रतिरोध कला कर सकती है।[8] कला हर तरह की हिंसा, चाहे वो दैहिक हो या मानसिक उसका प्रतिकार है। हिंसा मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने देती और न ही समाज को रहने लायक छोड़ती है। सदियों से मानव समाज हिंसा से ग्रस्त रहा है। ''व्यक्ति से लेकर समाज और समाज से लेकर राज्य तक प्रभुत्व की आकांक्षा ही वह तत्व है जो हिंसा को अपना सबसे प्रभावी हथियार बनाता है और भय पैदा करने के लिये नाना तरह की क्रूरताएँ करता है। समय बदला, सभ्यताएँ बदली, पर व्यक्ति के भीतर छिपी पशुता नहीं मरी।[9]

कला सृजन के माध्यम से हिंसा के प्रतिरोध को व्यवहारिक रूप प्रदान करने के लिये कला समाज को व्यापक स्तर पर सक्रिय होना अनिवार्य है। पारितोष सेन ने हर प्रकार की हिंसा से बेचैनी का अनुभव कर 'हिंसा' श्रृंखला को रचा। उनका कहना है कि ''बड़ा प्राणी छोटे प्राणी को ग्रास बना रहा है। आतंकवाद हिंसा को नई शक्ल दे रहा है, हिन्दू–मुस्लिम दंगे में हिंसा–यानि हिंसा के कई चेहरे हैं। हिंसा को लेकर भीतरी यंत्रणा से ही विश्वयुद्ध, देश–विभाजन दंगे, खाड़ी युद्ध, नक्सल आन्दोलन–जैसी राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय घटनाओं पर मैंने चित्रकृतियाँ बनायी हैं।[10] चिंतन उपाध्याय ने अपने जले–कटे रेखांकनों में दंगों के मध्य 'मर्दानगी' की पाश्विक अभिव्यक्ति के यौन प्रतीक, एक हिंसक आक्रमण में जलाये गये अजन्में बच्चे आदि के द्वारा मात्र गुजरात की हिंसा ही नहीं वरन् दुनियाभर में हो रही क्रूर हिंसा की ओर प्रेक्षक का ध्यान आकर्षित किया।

एक परम्परावादी बोहरा मुस्लिम परिवार के तैयब मेहता ने सच्चे हिन्दुस्तानी के समान धर्म निरपेक्ष मूल्यों की अभिव्यक्ति अपनी रेखाओं और रंगों के माध्यम से की है। बाइस वर्ष की उम्र में उन्होंने भारत विभाजन की हिंसा से व्यथित घोर वितृष्णा, करूणा और संवेदनाओं की क्षतिग्रस्त स्थिति में चित्रकला की दुनिया में पर्दापण किया। उनका उद्देश्य मानवीय संवेदनाओं, करूणा तथा मनुष्य की तकलीफों को ही समाज के समक्ष प्रस्तुत करना था। उनके चित्रों में प्रयुक्त प्रतीक प्रत्येक प्रकार की हिंसा के विरूद्ध थे। मुम्बई के दंगों से गहरे प्रभावित तैयब काली, दुर्गा, महिषासुरमर्दिनी सभी चित्रित करते हैं। शान्त, क्रान्तिकारी कलाकार के रूप में उभरने वाली उनकी छवियों में एक सम्मोहन है। हिंसा के रूप–प्रतिरूपों में यहीं–कहीं क्षीण सी खुशी भी है। उनकी 'साँड' श्रृंखला में अंकित साँड संभवतः

अमानवीयता की पराकाष्ठा प्रतिबिम्बित करता है। मनुष्य के पतन को दर्शाती उनकी 'गिरती हुयी आकृतियाँ' श्रृंखला अवसाद के अस्तित्व के लिये किये गये संघर्ष की कलात्मक अभिव्यक्ति है।

इसी प्रकार देश–विभाजन की विभीशिका देखने–भोगने वाले वीरेश्वर भट्टाचार्यी देश में कुछ भी गलत हो रहे की अभिव्यक्ति से स्वयं को रोक नहीं पाते। इंग्लैण्ड में प्रवेश हेतु कौमार्य के परिक्षण के समय निर्मित उनकी कृति ''मैरी के आँसू'', पंजाब के आतंक के विरूद्ध ''टैररिस्ट'' श्रृंखला तथा बिहार के नर–संहार से उद्वेलित होकर कलाकृतियाँ बनायीं। आपातकाल के विरूद्ध जन–चेतना लाने हेतु पोस्टर प्रदर्शनी एवं नाट्य प्रयोगों का आयोजन। इन सभी को वे अपनी कला का दायित्व निर्वाह करना मानते हैं।

मनुष्य की समस्त बौद्धिक क्रियायें समाज के भीतर होती हैं, अतः उस पर सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ना निश्चित है। कला में सदैव सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों को परिलक्षित कर वास्तविकताओं को साकार रूप प्रदान किया गया है। कलाकृतियों में कलाकार के मन में उपजी प्रतिक्रियायें ही सदैव साकार रूप धारण करती रही हैं। वास्तव में कला सामाजिक जागरूकता की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है। जिसका सीधा संबंध मनुष्य की चेतना से होता है। यदि कोई भी कृति किसी एक दर्शक को भी सोचने पर मजबूर करने की क्षमता रखती है तो ऐसी कला को सार्थक माना जायेगा। गाँधी का मानना था कि मशीन युग की दौड़ में हृदय की सच्चाई को प्रकट करना ही वास्तविक कला है, जिसके प्रतीक चर्खा व खादी हैं।

नवल किशोर रस्तौगी को विश्वास है कि उनके चित्र समाज में फैले अभिशाप, आडम्बर एवं दुष्प्रवृत्तियों को दूर करेंगे। उन्होंने प्रण किया है कि ''मैं अपनी कलाकृतियों द्वारा समाज के शोषित तबकों के दुःख दर्द, समाज में फैले आडम्बर, अभिशाप आदि को दूर कर एक स्वस्थ और स्वच्छ आईना इस संसार को दूं। यही कारण है कि मेरी कृतियाँ भिखारी, स्ट्रीट चाइल्ड, आज का समाज, नारी शोषण, सामाजिक आडम्बर, वाटर आदि बन सकीं।''[11]

संत समान व्यक्तित्व वाले सोमनाथ होर का जीवन संघर्षों से घिरा हुआ था। इनकी कला में समय, समाज और संघर्ष की छवियों की चित्रभाशा में अभिव्यक्ति मिलती है। समय–समाज की गहरी समझ वाले होर की दृष्टि में 'वे तस्वीरें नहीं जख्म बनाते हैं।' भावेश सान्याल ने अपनी कला के माध्यम से समाज के निचले वर्ग तथा महिलाओं की दशा एवं ज़िदगी को बेमिसाल ढंग से उकेरा। गणेश पाइन के चित्रों के पात्र भी निचले वर्गों के लोग, भूमिहीन कृषक, भिखमंगे, जूता गाँठने वाले, मछुआरे तथा ग्रामीण मजदूर आदि ही थे। सामाजिक अन्याय तथा गरीबी को जीवन का घाव मानने वाले पनेसर की कला इन्हीं विषयों के आस–पास की वास्तविक गरीबी के महासमुद्र को भूलने नहीं देता। 'बिलो दि पॉवर्टी लाईन' (श्रृंखला), मैप, नेहरू रोज़ ब्लोसमिंग इन एक स्लम, अनकोडेड साइलेंस, घाव सभी चित्रों का उद्देश्य दैन्य में सौन्दर्य की तलाश है।

वेणु मिश्रा का चित्र 'लास्ट समर' और मृत्यु में सामाजिक चिन्ता प्रतिहवानित होती है। वहीं मुनिन भट्टाचार्य ने अपनी कृति 'माय पेरेन्ट्स' में वर्ण–संकर संबंधी प्रश्न उठाये हैं। एम0एच0 बोरभूयां के 'पेनोरमा' व 'दंगा' श्रृंखला के चित्र राजनीतिक–सामाजिक स्थिति की मुखर अभिव्यक्ति थे।

अखिलेश कहते हैं कि 'मनुष्य' बेहतर 'मनुष्य' होने की तरफ बढ़ सके। हिंसा, लोभ, ईर्ष्या आदि की भावना कम रखे। अर्चना दास एवं अनिन्हाय बन्धोपाध्याय अपनी कला सर्जना के माध्यम से आपाधापी भरे समाज में शान्ति एवं समृद्धि का संचार करना चाहते हैं।

चित्रकला एक सजीव वस्तु और मानसिक अवस्था है, जो साँस लेती है। अतः कलाओं के विषय दर्षश्टिगत रूपों से संबंधित होते हैं। पिकासो का मानना था कि विचार तो कलाकार देता है, जो सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप ही फलता है। एक चित्रकार के पास दृष्टि होनी चाहिये क्योंकि एक सजीव अवधारणा और छिपे हुये यथार्थ का अन्वेषण इस दृष्टि से ही संभव है। इसी पैनी दृष्टि का उदाहरण मुखी चौधरी की कला है। मानवीय भावनाओं के सफल चितेरे समय व समाज के अंतर्द्वन्द्वों और तनावों को रूपायित करूं और हस्तक्षेप भी कर सकूं। जीवन में असमानता हमें कचोटती है, समाज में आये दिन होने वाली घटनाओं से मन उद्वेलित हो उठता है। मैं चाहता हूं कि अपनी कला के माध्यम से मैं इन स्थितियों पर एक टिप्पणी कर सकूं और सफलतामूलक समाज की स्थापना में मेरा भी किरदार हो। मेरी कला का यही उद्देश्य है।[12] पी0एन0 चोयल के चित्रों में सामाजिक उत्पीड़न चित्रित हुआ है तो अब्दुल करीम की 'टेंशन' श्रृंखला तनाव की सजीव अभिव्यक्ति है। शैलेन्द्र भटनागर की मुखर प्रतीति ने मानवीय देहों की टूटन एवं क्रंदन में भावाभिव्यक्ति की सफलता को प्राप्त किया है। सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय ने संवेदनात्मक पहलुओं को दर्शाने का केन्द्र 'मुर्गा' रखा। मुर्गा पक्षी होने के साथ–साथ मानवीय जीवन से जुड़ी व्यथा, कराह, कुण्ठा एवं प्रताड़ना भी रेखांकित करता है। सुमन मेहता के चित्रों में मानवीय त्रास, आंतंक और तमस गहरे व्यक्त हुये हैं।

जोगेन चौधरी की कला स्पष्ट करती है कि कला के सन्दर्भ सदैव सामाजिक होते हैं क्योंकि कलाकार मूलतः मनुष्य होने के कारण समाज का एक अविभाज्य संवेदनशील अंग है, अतः समाज से निरपेक्ष नहीं माना जाता। वेद प्रकाश भारद्वाज महिलाओं की पीड़ित अवस्था को अपने चित्रों का मुख्य विषय बनाते हुये कहते हैं, हमारे समाज का बहुत बड़ा हिस्सा ऐसे लोगों का होता है जिन्हें बहुत अधिक यातनाओं से गुजरना पड़ता है, वे हमेशा एक तरह के दबाव में जीते हैं, विशेष रूप से औरतें। हम आये दिन अखबार में औरतों के प्रति होने वाली हिंसा की खबरें पढ़ते हैं। मैं महसूस करता हूँ कि औरतें हमारे समाज के सबसे अधिक पीड़ित वर्ग का सबसे बड़ा हिस्सा है। हमारे समय में कितनी बड़ी हिंसा है, कहीं आतंकवाद के रूप में तो कहीं साम्प्रदायिकता के रूप में, तो कहीं किसी और रूप में। ईराक, अफगानिस्तान से लेकर गुजरात, बंगाल तक हर जगह प्रत्येक प्रकार की हिंसा से सबसे ज्यादा पीड़ित स्त्री ही है। इसी को मैं अपने रूपाकारों में घाव के रूप में सांकेतिक रूप से प्रकट करता हूँ।[13]

सामाजिक विडम्बना के श्रेष्ठ चित्रकार रणबीर सिंह बिष्ट की कला समाज, राजनीति तथा भौतिक समस्याओं से जूझने का एक रचनात्मक कदम थी। ''ब्लैक पेज़ेज'' श्रृंखलाओं में सामाजिक व्यवस्था से उत्पन्न असंतोष व उथल–पुथल के अतिरिक्त विकृत मानसिकता वाले व्यक्तियों के किये गये कुकर्मों के परिणामस्वरूप अनचाहे की समाज में जिल्लत की ज़िदगी भी दिखायी है। वे एक कलाकार और चिंतक के रूप में देश और संस्कृति के प्रति सदैव सचेत रहे। उन्होंने अपने चित्रों में किये गये कटाक्ष द्वारा राष्ट्रीय राजनीति और प्रशासनिक व्यवस्था को चरमराने की कोशिश करने वालों के प्रति आगह किया। मनुष्य की बदहाली, सत्ता तंत्र के क्रूर और जन–विरोधी चरित्र सबके समक्ष लाने की उन्हें चिन्ता

है। वे परेशान एवं बौखलायें थे कि मनुष्य विशेषकर महिलाओं एवं बच्चों की ऐसी स्थिति क्यूँ है? इस श्रृंखला में बिष्ट जी ने जंगल के मादा खोर भालू की प्रतीक रूप में प्रयोग किया।

बिष्ट की नग्न नारी के साथ कुत्ते की प्रतीकात्मक रचना श्रृंखला में मनुष्य की पशुवत् प्रकृति का संवाद है। वे नारी के प्रति कामुक व्यवहार की ओर समाज के घृणा एवं चेतना का भाव जगाना चाहते थे। बिष्ट स्वयं को ''समाज का हिस्सा मानते हुये भारत व विश्व में फैलते आतंकवाद एवं अलगाववादी ताकतों और जातिवादी हिंसा के विरूद्ध अपनी आवाज कलाकृतियों के माध्यम से बुलंद करते नज़र आते हैं।''[14] सजग सामाजिक भूमिका वाले चित्रकार के रूप में परिभाषित बिष्ट विषय के रूप में भूख, तृष्णा, वासना, क्रान्ति, आतंकवाद तथा गांधी चिन्तन को विस्तार प्रदान करने वाली कृतियाँ निर्मित करते हैं। वर्तमान भयावह स्थिति के लिये वे राजनीतिक कार्य शैली को ही दोषी मानते हैं। अतः हम देखते हैं कि गाँधी जी की दुनिया के ऐसे अनेक कलाकार थे जिन्होंने भारतीय परम्पराओं एवं विषय वस्तु को आधार बनाकर नवीन प्रयोग किये।

रामेश्वर बरूटा ने संघर्षरत वर्ग पर काम किया। उन्हें ये सवाल लगातार कुरेदते रहे कि एक वर्ग ऐशोआराम में जी रहा है, वहीं एक बड़ा समुदाय एक रोटी के लिये संघर्ष कर रहा है। उनकी सोच है कि ''उस व्यक्ति में ताकत होनी चाहिये, वह मजबूत होकर ही तो जबाव दे पायेगा।''

हरिजन कलाकार स्वामी कुमारिल ने प्रारम्भ से ही हरिजन उत्थान जैसे सामाजिक कार्यों को अपनाया। शान्ति निकेतन में गाँधी जी के सम्पर्क में आने के पश्चात उनसे प्रभावित हो उनकी कला में नवीन मोड़ आया जिनमें गाँधी की सादगी दर्शनीय है यथा हिमालय यात्रा व चरवाहे आदि चित्र। असाधारण विपदा से उपजे गोवर्धनदास के चित्रों में अकाल से ग्रसित भूख से मरते लोगों का अंकन किया गया है।

गाँधी के राजनीतिक मंच पर आते ही समग्र राष्ट्र का ध्यान प्रथम बार किसानों की ओर आकृष्ट हुआ। जिसमें किसान दुर्बलता नहीं, वरन् एक शक्ति के रूप में पहचाना गया। विनोद बिहारी मुखर्जी तथा रामकिंकर बैज की कलाकृतियों में किसान की गरीबी तथा शोषित स्थिति के स्थान पर ग्रामीण जीवन का आदर्शीकरण चित्रित किया गया है।

देश के स्वतन्त्रता संग्राम के दौर से गुजरने के पश्चात् इस संग्राम के इतिहास को स्मारक के रूप में मूर्त रूप देना आज़ाद देश में ही संभव था। मूर्तिकार देवी प्रसाद राय चौधरी कृत दिल्ली में दण्डी मार्च करते हुये गाँधी जी और उनका अनुगमन करते विभिन्न प्रान्त के लोग बनायी गयी। पटना में 'एक झण्डे तले' संदेशपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण स्मारक में स्वतन्त्रता की लड़ाई के लिये विद्यार्थियों का समूह इतिहास की स्मृति कराते हैं।

मूर्तिकार सुतार मानते हैं कि गाँधी का जीवन स्वयं एक संदेश है। जिसे प्रसारित करने के लिये उन्होंने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गाँधी की मूर्तियों का निर्माण किया। 1960 में मध्यप्रदेश और राजस्थान की सीमा पर गाँधी सागर बाँध पर बन्धुत्व का प्रतीक दो बच्चों के साथ चम्बल की देवी की मूर्ति स्थापित की।

गाँधी का समग्र जीवन–दर्शन अहिंसा (केन्द्र) के चारों ओर सत्य (वृत्त) की परिधि से घिरा हुआ है। गाँधी ने अहिंसा को समाज और राष्ट्र की अहिंसा के रूप में परिणत करके दिखाया।[15] सन् 1955–58

तक तीन वर्ष की अवधि में नई दिल्ली स्थित बिड़ला हाउस में ''गाँधी जीवन दर्शन'' पर कृपाल सिंह शेखावत ने 58×4 फुट का विशाल भित्ति चित्र अंकित किया। जिसे कई भागों में विभाजित कर सुन्दर रंग योजना एवं संयोजन के साथ गाँधी जी के संपूर्ण जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को चुन कर चित्रित किया। चित्र यथार्थ शैली में निर्मित किया गया है और कहीं–कहीं लोक प्रभाव भी दिखायी देता है। 'जयपुरी आराइश' विधि में निर्मित इस चित्र की आकृतियाँ सरल एवं सहज हैं। इसी प्रकार गाँधी जी का अवनीन्द्रनाथ ठाकुर का चार फुट × डेढ़ फुट बड़ा चित्र भी गाँधी के आदर्शों से हमारा साक्षात्कार कराता है।

सिसली मूल के लेत्तेरियो कालापाइ की कृति 'गाँधी' के संदर्भ में प्रख्यात कला आलोचक हौवर्ड देवी का कहना है कि ''गाँधी के सन्देश के अनुरूप ही कालापाइ की अधिकांश कृतियाँ विनम्र भी हैं और सशक्त भी हैं, उनमें लौकिकता भी है और वे रूहानी भी है।''[16]

सच्चा कलाकार अपने समय की क्रूर सच्चाई को सिर्फ खामोश रह कर नहीं देख सकता। सत्य वहीं है जिसका हमने साक्षात्कार किया है सत्य के स्वयं दर्शन कर उसे रूपायित करने वाला ही सच्चा कलाकार होता है। सत्य को महसूस कर ऐसी दृष्टि प्राप्त करना संभव है जो समभाव का दर्शन करा सके। कला के माध्यम से रचनात्मक संकेत दिये जाते हैं। कला में हमारे स्वयं को सृजन के द्वारा जीवन को समग्र रूप में उकेरा जाता है। अतः जीवन में व्याप्त समस्त परिस्थितियाँ व समस्यायें हिंसा, घुटन, कुंठा, संत्रास, अभाव एवं बेचैनी सभी दिखने स्वाभाविक हैं। ऐसे समाज में यदि कलाकार अपनी कला में संतोष का भाव दिखा सके तो वह कला के मानवीय होने की शर्त है। गाँधी का मानना था कि ''मैं मानवतावाद की सेवा के द्वारा ईश्वर के दर्शन करने का प्रयत्न कर रहा हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि ईश्वर न तो स्वर्ग में है और न नीचे पाताल में। वह तो हम में से हर एक में है।''[17]

गाँधी की आध्यात्मिकता इस संसार से अलग हट कर किसी गुफा में बैठ कर भजन करने में नहीं है। वह तो संसार में रहते हुये उसमें कार्य करने और प्राणी मात्र के प्रति जो आध्यात्मिक दृष्टिकोण है उसको समाज–विमुख न बनाकर समाज–सेवक बनाने में है। कला में रचना धर्म की आस्था मनुष्य को महानाश से उबार कर सृजन की ओर प्रेरित करती है। कलाकार ''नाश'' की निर्वेयक्तिकता के स्थान पर 'सृजन' को अधिक महत्वपूर्ण मानता है। रोरिक ने हिमालय के अनेक परिपेक्ष्यों के अंकन द्वारा भारतीय आध्यात्मिकता को उजागर किया। उनके चित्रों से गाँधी भी प्रभावित थे।

''जिस प्रकार की भौतिक पदार्थों में एक ऐसी संघात्मक शक्ति (कोहेसिव फोर्स) जो उन्हें आपस में बांधे रखती है, उसी प्रकार समस्त प्राणी मात्र में भी ऐसी संघात्मक शक्ति का होना अनिवार्य है और इसी संघात्मक शक्ति का नाम प्रेम है। जहाँ प्रेम है वहीं जीवन है। जहाँ घृणा है वहाँ विनाश है। गाँधी जी के इन्हीं आदर्शों की छवि के अन्तर्गत कला भी वस्तुतः एक से अनेक होने की प्रक्रिया है, अनेक से जुड़ने की प्रक्रिया है। स्व के केन्द्र पर विस्तार पाकर जब कलाकार वृहद रूप ग्रहण करता है तो वह अनेक रूप हो जाता है। एक से अनेक होना ही कला की सामाजिक उपयोगिता है।

गाँधी मनुष्य व मनुष्य की समानता और बंधुत्व को एक चिर सत्य मानते थे। भारतीय चिंतन की कल्पना के अनुसार भी स्त्री–पुरूष एवं वर्ग–भेद को नकारा गया है। ''समत्वं योग्मुच्यते'' आज के संदर्भों में उपयुक्त है। गाँधी के भारतीय चिंतन के अनुसार अनेक कलाकारों ने अपनी कला में अहिंसा

और भेदभाव को मिटाकर एक स्वच्छ समाज की छवि प्रस्तुत की।

गाँधी के आन्दोलनों ने आँधी के समान समस्त जीवन में व्याप्त होकर अहिंसक तरीके से एक बड़े साम्राज्य को झकझोर दिया। साम्प्रदायिक कट्टरता के स्थान पर सहिष्णुता, बर्बरता और पाश्विकता की प्रतिक्रिया को उन्होंने शिव के गरलपान के समान आत्मसात् कर शान्त किया। केवल उन्हीं में इतनी सामर्थ्य थी कि अपने समीपस्थ वातावरण से निर्लिप्त, विकार शून्य और सर्वथा ऊपर उठ कर राष्ट्र को गौरवशाली भविश्य प्रदान किया। हम में से किसी के लिये गाँधी बनना तो संभव नहीं किन्तु उनके बताये जीवन के महान संतुलित मार्ग को अपना एक स्वस्थ समाज के निर्माण में सहयोग दें।

झण्डा लेकर आन्दोलन करना कलाकार का काम नहीं है। कला प्रतीकात्मक एवं प्रेरणादायक होनी चाहिये जो लोगों का मार्ग दर्शन कर सके। गाँधी की दृष्टि में आज की शोषक सभ्यता चाण्डाल सभ्यता है। सच्चा कलाकार अपने ढंग से सामाजिक विडम्बनाओं का प्रतिरोध करता है। जिसके लिये वह अपनी रंगों एवं रेखाओं की भाषा का आश्रय लेता है। कलाकार को इतना सक्षम होना चाहिये कि इन विषमताओं से समाज में जो प्रदूषण फैल रहा है, उसे पचा सके। उसको एक नयी दृष्टि देकर अभिव्यक्ति दे सके।

महात्मा गाँधी भारतीय महापुरूषों की उस अनवरत श्रृंखला में जो प्राचीन काल से अब तक चली आ रही है एक उद्दीप्त सूर्य के समान है। जिन्होंने सत्य और अहिंसा को जोड़कर समस्त संसर को अपने चरणों में झुका दिया। ''गाँधी जी एक युग पुरूष हैं। उनका संदेश सदियों के लिये है। यह महात्मा गाँधी का गौरव है, उनकी अपूर्व सफलता है कि उनका संदेश उनके जीवन काल ही में चारों और फैल चुका है। उनकी अगर वाणी उनके निर्वाण के बाद सारे संसार पर छायेगी और लोगों को सदियों तक प्रेम और शान्ति का आशीर्वाद देती रहेगी।''[18] संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रविष्ट गाँधी की युगान्तरकारी एवं युगनिर्माणकारी विचारधारा ने कला के क्षेत्र को ही नहीं वरन् प्राणी मात्र को बलिदान का पाठ पढ़ाकर 'विश्व बंधुत्व; की राह दिखायी। जो हर युग में उतनी ही सार्थक है जितनी पूर्व में थी। महात्मा गाँधी मरने से पूर्व यदि बिन्दु थे तो मरने के पश्चात सिन्धु बन गये।

सन्दर्भ सूची

1. गाँधी ग्रंथ, संपादक श्री प्रेम नारायण माथुर, रामनारायण लाल, सुश्री राजेष्वरी (लेखिका), गाँधी और प्लेटो, पृ0 143
2. डॉ0 राधा कमल मुखर्जी, समकालीन कला, अंक 36–37, जुलाई–अक्टूबर 2008, नवम्बर, पृ0 53
3. लंदन मैगज़ीन की एक भेंट वार्ता में आर0बी0 किटाज़ का कथन
4. एन0 खन्ना, आचार्य नन्द लाल बसु–दृष्टियाँ और दृष्टिपरक, कला चिंतन, पृ0 88
5. डॉ0 ज्योतिष जोशी, एन0 एस0 बेन्द्रेः अनवरत साधना की संकल्प चेतना, समकालीन कला, अंक 35, मार्च–जून 2008, पृ0 25
6. जयसिंह नीरज, महात्मा गाँधी और कलात्मक सृजन, समकालीन कला, अंक 17, मई 1996, पृ0 34–35
7. आनन्द कुमार स्वामी, आर्ट एण्ड स्वदेशी, मद्रास

8. समकालीन कला, सम्बोधन (प्रकाशकीय), अंक 35, मार्च–जून 2008
9. वही
10. विश्वविख्यात कलाकार श्री परितोष सेन से कृपाशंकर चौबे की बातचीत, चित्र बनाना जहां खत्म होता है वहीं सृजनात्मक कला शुरू होती है, समकालीन कला, फरवरी–मई 2002, अंक–21, पृ0 44
11. यथार्थ चित्रण को उकेरने का कार्य, नवल किशोर रस्तौगी, समकालीन कला, अंक 21, पृ0 42
12. अपने समय के साथ चलने की यात्रा, मुखी चौधरी, समकालीन कला, अंक 20, अक्तूबर 2001, पृ0 50
13. जोगेन चौधरी का अन्तःरंग, वेद प्रकाश भारद्वाज, कला दीर्घा, अक्तूबर 2008, अंक 17, पृ0 36
14. चन्द्रकान्त पालीवाल, कला की नई बुलंदियों के संवाहक, प्रो0 बिष्ट, कला त्रैमासिक, बिष्ट विशेषांक, पृ0 44
15. श्री सुधीन्द्र, गाँधी और हिन्दी वाड्मय, पृ0 81
16. डॉ0 श्याम भारद्वाज, लेत्तेरियो कालापाइः मैं कला ही जीता हूँ, समाकलीन कला, अंक 35, पृ0 30
17. गाँधी ग्रंथ, सम्पादक श्री प्रेम नारायण माथुर, राम नारायण लाल, इलाहाबाद, महात्मा गाँधी और उनका इतिहास में स्थान
18. श्री मन्ना नारायण अग्रवाल, क्या गाँधी युग खत्म हुआ, पृ0 140